

पाठ - 4

नमाज़ की कैफियत

الدرس الرابع - هندي

كيفية الصلاة

नमाज़ पढ़ने का तरीका : तमाम इबादतों की तरह नमाज़ के वक़्त भी नीयत का होना ज़रूरी है। नीयत दिल के इरादे का नाम है ज़बान से अदा करने की जरूरत नहीं है। नमाज़ पढ़ने का तरीका निम्नलिखित है :

1. नमाज़ी पूरी तरह किब्ला की ओर खड़ा हो, टेढ़ा तिरछा होकर खड़ा होना ग़लत है।
2. फिर तकबीरे तहरीमा यानी **अल्लाहु अकबर** कहे और तकबीर के समय अपने दोनों हाथों को दोनों मोड़ों या दोनों कानों तक उठाए।
3. फिर अपनी दाहिनी हथेली को बायीं हथेली पर रखकर सीने पर रखे।
4. फिर सना पढ़े : **الْحَمْدُ لِلَّهِ مُحَمَّدًا كَثِيرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيهِ**

अल्हम्दु लिल्लाहि हम्दन कसीरन तय्यिबन मुबारकन फीहि (सही मुस्लिम 600) या यह पढ़े :

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَعَالَى جَدُّكَ، وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ

सुबहानकल्लाहुम्म व बिहम्दिक् व तबारकस्मुक् व तआला जहुक् वला इलाह गैरुक, (अबू दाऊद 775) या इसके सिवा कोई दूसरी दुआ-ए-इस्तिफ़ताह पढ़े। बेहतर तो यह है कि यह दुआ बदल बदल कर पढ़े। एक ही दुआ को न पढ़े। क्योंकि इस से खुशू व खूजू की कैफियत पैदा होगी।

5. उसके बाद तरुज़ यानी **أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ** अरुज़ु बिल्लाहि मिनशैतानिर्रजीम, पढ़े।

6. उसके बाद **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** "बिस्मिल्लाहि र्हमानिर्रहीम पढ़े और फिर सूरह फ़ातिहा की तिलावत करे,

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ * الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ * مَالِكِ يَوْمِ الدِّينِ * إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ * اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ * صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ * غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ *

अलहमदु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन, अर्रहमा निर्रहीम, मालिकि यौमिदीन, इय्याक नाबुदु वइय्याक नसतईन, इहदि नस्सिरातल मुस्तकीम, सिरातल्लजीन अनअमत अलैहिम, गैरिलमगजूबि अलैहिम वलज्जाल्लीन, आमीन,,

7. उसके बाद जितना हो सके, कुरआन की तिलावत करे

8. फिर रुकूअ करे और रुकूअ के समय अपने हाथों को कंधों तक उठाए और अल्लाहु अकबर कहे। रुकूअ के दौरान अपने हाथों से घुटनों को पकड़े रखे। इस दौरान उंगुलियां फैली हुई हों और यह दुआ पढ़नी चाहिए **"سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيمِ**

सुन्नत यह है कि इसको तीन बार पढ़ा जाए इससे ज़्यादा बार भी पढ़ना जायज़ है और यदि एक बार भी पढ़ते हैं तो भी काफ़ी होगा।

9. फिर इमाम और मुफ़रिद (यानी अकेले नमाज़ पढ़ने वाला) में से हर कोई **"समीअल्ला हुलिमन हमिदह** कहते हुए रुकूअ से अपना सिर उठाए और रुकूअ से उठने के दौरान दोनों हाथों को मोड़ों तक उठाए। मुक़तदी केवल **"रब्बना व लकल हम्द"** कहेंगे, और अपने दायें हाथ की हथेली को बायें हाथ की हथेली पर रखकर सीने पर रख लेंगे।

10. रुकूअ से उठने के बाद क़ियाम के दौरान ये दुआ पढ़ेंगे।

"اللَّهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ مِلءُ السَّمَاوَاتِ، وَمِلءُ الْأَرْضِ، وَمِلءُ مَا بَيْنَهُمَا، وَمِلءُ مَا شِئْتَ مِنْ شَيْءٍ بَعْدُ"

लकल हम्दु मिल्आस्समावाति व मिल्आल अरजि व मिल्आ मा बैनुहुमा व मिल्आ मा शीइत मिन शैयइन बादु,

11. फिर पहला सजदा करे और सजदे में जाते समय अल्लाहु अकबर कहे और अपनी सात हड्डियों यानी पेशानी के साथ नाक, दोनों हथेलियों, दोनों घुटनों और दोनों पांवों के किनारों पर सजदा करे। इस बीच अपने बाजू को बगल से दूर रखे और अपने पांवों की उंगुलियों के सिरों को किब्ला रुख करे

جمعية الدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بالزلفي

مشروع تَعَلُّمُ الإسلام – أحكام الصلاة

और सजदा में यह दुआ पढ़े 'سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى' इस बारे में सुन्नत है कि इसे तीन बार पढ़ा जाए, तीन बार से ज्यादा पढ़ना भी जायज़ है। और एक बार पढ़ना भी काफी होगा और सजदा के दौरान ज्यादा से ज्यादा दुआ करना मुस्तहब है, क्योंकि यह उन जगहों में से है जहां दुआ को कुबूल किया जाता है।

12. फिर इंसान अल्लाहु अकबर' कहते हुए सजदा से अपना सिर उठाए और दोनों सजदों के बीच अपने बायां पांव पर बैठे और दाहिने पांव को खड़ा रखे और अपने दाहिने हाथ को दाहिने रान के किनारे यानी घुटने से करीब रखे और बायें हाथ को बायें रान के किनारे यानी घुटने से करीब रखे और हाथों की उंगलियां फैली हुई हों और उस बैठक में यह दुआ पढ़े। **रब्बिगु फिरली, रब्बिगु फिरली,**

13. फिर दूसरा सजदा करे और उसमें उन्हीं चीजों को अंजाम दे जो उसने पहले सजदा में किया था।

14. फिर दूसरे सजदे से अल्लाहु अकबर कहते हुए सीधा खड़ा हो जाए।

15. दूसरी रकअत में दुआए इस्तिफताह और तक्ज़ के सिवा, दूसरे सभी कथनी और करनी को अंजाम देगा जो उसने पहली रकअत में किया है, अलबत्ता इस रकअत के दूसरे सजदा के बाद उसी तरह बैठेगा जिस तरह दोनों सजदों के बीच बैठता है और यहां दाहिने हाथ की उंगलियों को समेट लेगा और अंगूठे को बिचली उंगली के साथ जोड़ देगा और शहादत की उंगली से इशारा करेगा और उस जुलूस में तशहहुद पढ़ेगा। तशहहुद यह है :

التَّحِيَّاتُ لِلَّهِ وَالصَّلَاةُ وَالطَّيِّبَاتُ، السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ، السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ، أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

वत्तयिबातु, अस्सलामु अलैक अय्युहन्नबिय्यू व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू, अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्ला हिस्सालिहीन, अशहदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु व अशहदु अन्न मुहम्मदन अबदुहू व रसूलुह, इसके सिवा तशहहुद के दूसरे वाक्य भी आए हैं।

यदि तीन या चार रकअत वाली नमाज़ पढ़ रहा हो जैसे मगरिब, जोहर, अस्त्र या इशा तो इसके बाद अल्लाहु अकबर कहते हुए खड़ा हो जाए और कियाम के समय अपने हाथ को अपने मोठों तक उठाए और बाकी नमाज़ को दूसरी रकअत की तरह से पूरा करेगा। अलबत्ता कियाम में केवल सूरह फातिहा पढ़ेगा। आखिरी रकअत में दूसरे सजदा के बाद बैठेगा, तशहहुद के बाद दरुद इब्राहीमी पढ़ेगा।

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ، كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ، وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ، إِنَّكَ حَمِيدٌ حَمِيدٌ، اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ، كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ، وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ حَمِيدٌ

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिन, व अला आलि मुहम्मदिन, कमा सल्लैत अला इब्राहीम व अला आलि इब्राहीम, इन्नक हमीदुम मजीद, अल्लाहुम्म बारिक अला मुहम्मदिन व अला आलि मुहम्मदिन कमा बारकत अला इब्राहीम व अला आलि इब्राहीम, इन्नक हमीदुम मजीद, इस दुआ को पढ़ने के बाद जितना चाहे दुआ करे। सुन्नत यह है कि इंसान ज्यादा से ज्यादा दुआ करे और यह दुआ भी पढ़े।

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ، وَمِنْ عَذَابِ النَّارِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ الدَّجَالِ،

अल्लाहुम्म इन्नी अरुजु बिक मिन अज़ाबिल क़बरि, वमिन अजाबिन्नार व मिन फितनतिल मह्या वल ममाति व मिन फितनतिल मसीहिदज्जाल

16. उसके बाद दायीं ओर "अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह कहते हुए सलाम फेर दे और फिर बायीं ओर भी उसी तरह से करे,

17. जोहर, अस्त्र, मगरिब और इशा की नमाज़ों में नमाज़ी के लिए तवरुक करना मसनून है। उसकी कैफियत यह होगी कि इंसान अपना दाहिना पांव खड़ा कर दे और बायें पांव को अपनी पिंडली के नीचे से निकाले और अपना सुरीन ज़मीन पर रख दे। और पहले तशहहुद में जिस तरह अपना हाथ रखा था, उसी तरह से रखे।